कलीसिया अध्याय 21

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज़ सुनने के लिए **प्रार्थना** करें।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **2 थिस्लुनिकियों 1-3**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (2 थिस्लुनिकियों 1-3) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में मुख्य वचन)* **(8) यूहन्ना 7:38**

दो दो करके पुनरावलोकन करें।

(2) यूहन्ना 7:38 । मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[कलीसियाई अनुष्ठान]* **मसीही दफन**

परिचय: यह शिक्षा मसीही दफन के बारे में बताती है। हम सीखेगें कि बाइबल मृत्यु के बारे में क्या कहती है, मृत्योपरान्त क्या होता है, दफन समारोह और मृतकों में से जीवन उठना क्या है।

क. मनुष्य का स्वभाव

1. मनुष्य के स्वभाव के गैर बाइबलीय दृष्टिकोण।

दुनिया में मनुष्य के स्वभाव के लिए लोगों के अनेकों दृष्टिकोण हैं।

(1) फिलो का दर्शन। मनुष्य के स्वभाव के तीन भाग होते हैं।

यह दृष्टिकोण फिलो के दर्शन पर आधारित है(20 ईसा पूर्व-45 ईसा पश्चात, एलिक्जैन्ड्रिया)। फिलो ने बताया कि मनुष्य एक त्रीएकता है: मनुष्य में आत्मा, प्राण और एक देह है। यह दृष्टिकोण आगे भी मनुष्य की "आत्मा" और "प्राण" और "आत्मिक" और "प्राण सम्बन्धी" जीवन की विविधता का उल्लेख करता है। आत्मा ईश्वरीय दर्शन की बात करता है और प्राण मानवीय दर्शन की बात करता है।

यह विचारधारा पाश्चात्य देशों में अति प्रचलित है जिसके तहत कार्यों को आत्मा के कुछ को प्राण के और कुछ को देह के काम के रूप में वर्गीकृत कर दिया गया है।

- माना जाता है कि आत्मा का काम एक परमेश्वर का ज्ञान पाना और उसके साथ संगति रखना, विवेक ,अन्तर्बोध, और रचनात्मकता है।
- प्राण का काम केवल सोचने(दिमाग), निर्णय लेने और चुनाव करने (इच्छा)और विभिन्न प्रकार के भावों को अनुभव करने तक सीमित (हृदय) है।
- देह के काम को केवल इन्द्रिय ज्ञान तक सीमित कर दिया गया है: अर्थात देखना,सुनन, सूँघनना,चखना और सूघना।

यह वर्गीकरण वास्तविकता को अति–सरल कर दिया गया है परन्तु यह बाइबल आधारित नहीं है।

(2) प्लोटिनुस का दृष्टिकोण। मनुष्य के स्वभाव में दो बातें सम्मिलित होती हैं।

यह दृष्टिकोण पूर्वी (भारत) और पश्चिम (ग्रीस) की पौराणिक संस्कृतियों में अति प्रचलित था। आधुनिक संसार में बहुत से लोगों का दृष्टिकोण फिलो की neo-Platonic philosophy (269 ईसा पश्चात, एलिक्सजेण्ड्रिया)पर आधारित है । प्लोटिनुस से सिखाया कि मनुष्य में दोनों बातें पायी जाती है: अर्थात मनुष्य के पास एक देह और प्राण(आत्मा) दोनों हैं। इस दृष्टिकोण ने देह जो केवल शरीर है और प्राण जो केवल आत्मा है के बीच फरक को सामने रखा। जिसके परिणाम स्वरूप मनुष्य अपने शारीरिक व मनोवैज्ञानिक कामों को अलग अलग रख सकता है।

वे विश्वास करते हैं कि उसकी देह के काम और उसकी आत्मा के काम एक दूसरे को प्रभावित नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए, वह चाहे तो अपनी देह में दुनियावी जीवन और अपनी आत्मा में होकर धार्मिक जीवन व्यतीत कर सकता है। सामान्यतौर पर आत्मा को मनुष्य का आत्मिक व अतिआवश्यक भाग और देह को बुरा भाग माना जाता है। आत्मा देहान्त होने पर मुक्त होने तक देह की गुलाम होती है। मतलब यह है कि आत्मा को महत्पूर्ण और देह और मनुष्य द्वारा रची गयी सभी वस्तुओं को महत्वहीन माना जाता है। उदाहरण के लिए, रविवार को कलीसिया में जाकर अपनी आत्मा को बचाना महत्वपूर्ण माना जाता है, लेकिन बाकि सप्ताह आप इस संसार में अपनी देह में होकर किस प्रकार जीवन व्यतीत करते हैं वह उतना महत्वपूर्ण नहीं है। हालांकि इतिहास को पलट कर देखें तो इस दृष्टिकोण का मसीहियत पर बड़ा अनर्थकारी प्रभाव पड़ा है। यह विभाजन बाइबल के अनुसार नहीं है।

(3) प्राकृतिक दृष्टिकोण। मनुष्य का स्वभाव एक शारीरिक एकता है।

यह दृष्टिकोण वास्तव में स्वाभाविक है। यह दृष्टिकोण विश्वास करता है कि मनुष्य मांस और कुछ रासायनिक तत्वों से मिलकर बना है और उसमें क्रमागत प्रगति हुई है लेकिन मनुष्य में कोई आत्मा नहीं है।

2.मनुष्य के स्वभाव का बाइबल आधारित दृष्टिकोण: मनुष्य शरीर और आत्मा का मिश्रण है।

(1) मनुष्य में प्राण या जीव नहीं है वरन वह स्वयं एक प्राणी या जीव है।

बाइबल में दिया गया परमेश्वर का प्रकाशन उपरोक्त तीनों दृष्टिकोणों का समर्थन नहीं करता। बाइबल शिक्षा नहीं देती है कि "मनुष्य में प्राण" है, परन्तु वह बताती है कि मनुष्य एक "जीवता प्राणी" है। उत्पत्ति 2:7 का शाब्दिक अनुवाद है: परमेश्वर ने मनुष्य को रचा, जो ज़मीन की मिट्टी था और उसने उसके नथनों में जीवन (इब्रानी भाषा में: निशान्त चाज़िम)का आत्मा फूँका, जिसके द्वारा मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया (इब्रानी: नफेश; ग्रीक:शुचे; और अग्रेज़ी भाषा में सोल)। उत्पत्ति 2:7 उल्लेख करता है कि मनुष्य की रचना किस प्रकार से की गयी थी। उसने आदम अर्थात पुरूष को ज़मीन की मिट्टी से बनाया और फिर उसके नथनों में अपना आत्मा(श्वांस)फूँक दिया। इस प्रकार से आदम(अपनी देह और आत्मा के साथ) एक "जीवता प्राणी" या "जीवित जीव" बन गया।

मनुष्य का स्वभाव बिल्कुल अनोखा है: मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसके दो पहलू हैं: अर्थात एक प्रत्यक्ष शारीरिक पक्ष(देह)और दूसरा आत्मिक पक्ष(अर्थात आत्मा)! मनुष्य का प्राण (जीव) देह और आत्मा से मिलकर बना है। अत: एकता है द्विएकता या त्रीएकता नहीं है! देह तो सृजे गये भौतिक संसार से लिया गया है, परन्तु उसकी आत्मा उसे परमेश्वर की ओर से मिली है और मनुष्य प्रगट करता है कि वह परमेश्वर के स्वरूप का धारक है। मनुष्य के स्वभाव का बाइबल आधारित दृष्टिकोण इस बात को साबित करता है कि मसीही लोग अपने आप को किस तरह से देखते हैं: कि वे परमेश्वर के द्वारा रची गयी रचना हैं(वे मनुष्य की क्रमागत वृद्धि का परिणाम नहीं हैं), उन्होंने (परमेश्वर के विरूद्ध)पाप किया है और वे निश्चय मरेगें इस कारण उन्हें उद्धार (परमेश्वर द्वारा) पाने की आवश्यकता है।

2) मनुष्य के सम्बन्ध में एक मसीही दृष्टिकोण।

बाइबल मनुष्य के अनिवार्य स्वरूप को दोहरा नहीं परन्तु एक एकता मानती है(अर्थात जीवित प्राणी), जिसमें एक शारीरिक पहलू है(देह) और एक आत्मिक पहलू। मनुष्य एक "जीवित प्राणी है" अर्थात एक जीवित प्राणी है जिसमें प्रत्यक्ष देह और अप्रत्यक्ष आत्मा है। उसके दो पहलुओं(उसकी प्रत्यक्ष देह और अप्रत्यक्ष देह)के अन्तर को पहिचाना जा सकता है, लेकिन उन्हें इस धरती पर बिताने वाले जीवन में अलग नहीं किया जा सकता!

पुराने नियम में परमेश्वर नैतिक नियमों को बनाया, आनुष्ठानिक नियमों, नागरिकों से सम्बन्धित नियमों को बनाया और इन नियमों ने पुराने नियम में विश्वासियों के आत्मिक, नैतिक,सामाजिक और शारीरिक जीवन को प्रभावित किया। इन नियमों ने परमेश्वर के लोगों को यह शिक्षा प्रदान की कि परमेश्वर के लिए केवल आत्मिक ही नहीं वरन मनुष्य के जीवन का हर पहलू महत्वपूर्ण है।

मसीही लोग अपने आपको एक एकता मानते हैं: वह एक जीवित प्राणी है जिसमें प्रत्यक्ष देह और अप्रत्यक्ष आत्मा होती है। क्योंकि उसके प्राण(जीव) के दो पहलू हैं: अर्थात एक प्रत्यक्ष शारीरिक (देह)और एक अप्रत्यक्ष आत्मिक पक्ष(आत्मा) होता है, एक मसीही जन को अपनी देह और आत्मा दोनों का ही ध्यान रखना पड़ता है। अत: यह बहुत महत्वपूर्ण है कि मनुष्य अपनी अखण्ड देह और आत्मा के साथ अपना दैनिक जीवन किस प्रकार व्यतीत करता है। परमेश्वर चाहते हैं कि सारे मसीही लोग पवित्र और ईश्वरीय जीवन व्यतीत करें, न केवल उनकी आत्मा में वरन इस संसार में रहते हुए अपनी देह में भी(रोमियों 8:12-13; 2 पतरस 3:10-14)।

मसीही लोगों के लिए उनका शरीर बुरा नहीं है। मसीही जन का शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर होता है(1 कुरिन्थियों 3:16-17;6:19-20)। मसीही जन को अपने मन या अपने दैनिक जीवन में अपने शरीर और अपनी आत्मा में कोई विभाजन नहीं करना चाहिए। क्योंकि जब तक वे इस धरती पर जीवित हैं तब तक उनका शरीर और आत्मा अखण्ड हैं। और परमेश्वर चाहता है कि एक मसीही परमेश्वर को अपने शरीर और अपनी आत्मा दोनों के द्वारा महिमा दे।

(3) पाप में पतन के प्रति मसीही जन का दृष्टिकोण।

आदम और हव्वा के पाप में गिर जाने से मनुष्य के सम्पूर्ण जीव पर प्रभाव पड़ा। सम्पूर्ण मनुष्य(प्राण) उसके शरर और आत्मा के साथ पाप में गिर गया और वह परमेश्वर के उद्देश्य से पूरी तरह चूक गया। उसके पाप में गिर जाने से परमेश्वर के साथ उसके आत्मिक सम्बन्ध, अपने पड़ोसी के साथ उसके सामाजिक सम्बन्ध, और अपने आप से उसका मानसिक सम्बन्ध (बुद्धिजीवी, इच्छाशक्ति और भावनात्मक)और सृजे गये संसार के साथ उसका शारीरिक सम्बन्ध प्रभावित हुआ (उत्पत्ति अध्याय 3)। इसलिए बाइबल बिना आत्मिक जीवन के व्यक्ति को मृतक व्यक्ति मानती है(इफिसियों 2:1)। सम्पूर्ण मानवजाति पाप में गिर गयी है। सम्पूर्ण मानवजाति पाप और मृत्यु के द्वारा प्रभावित है। परमेश्वर सारी मानवजाति को जानता है और वह ही एक दिन उसका न्याय भी करेगा(इब्रानियों 4:12-13)।

(4) शारीरिक मृत्यु के प्रति मसीही दृष्टिकोण।

मसीही लोग बाकि की शारीरिक सृष्टि को बुरा नहीं मानते। बाकि के संसार में मनुष्य के समान आत्मा नहीं होता। उत्पत्ति 1:27 और 2:17 यह नहीं कहते कि परमेश्वर द्वारा रची गयी बाकि सृष्टि मनुष्य के पाप में गिरने से पहले शारीरिक मृत्यु से विमुक्त थी। मनुष्य के पाप में गिरने से पहले सारी वनस्पतियों को नश्वर अवस्था में बनाया गया था क्योंकि फल और पौधे खाये जाने पर खत्म हो जाते हैं(उत्पत्ति 1:29-30;2:16)।

मनुष्य के पाप में गिरने से पहले, इस धरती पर कांटों और ऊँटकटारों की भरमार थी क्योंकि परमेश्वर ने अभी अभी अपनी सृष्टि का निर्माणकार्य समाप्त किया था(उत्पत्ति 2:1)। लेकिन, मनुष्य को अदन की बाटिका में रहते हुए उसकी देखभाल करनी थी, उदाहरण के लिए उसे बगीचे में से झाड़ियों और ऊँटकटारों को बाहर निकालना था(उत्पत्ति 2:15)। लेकिन मनुष्य के पाप में गिरने के बाद,धरती श्रापित हो गयी और मनुष्य को इसमें पैदा होने वाले झाड़ियों और ऊँटकटारों को नियन्त्रित करने के लिए अतिरिक्त दु:खदायी परिश्रम करना पड़ा(उत्पत्ति 3:17-18)।

मनुष्य के पाप में गिरने से पहले, सर्प विद्यमान था(उत्पत्ति 1:24;3:1)। लेकिन मनुष्य के पाप में गिरने के बाद, सारे जानवरों में से सर्प श्रापित हुआ और अन्तत: वह मनुष्य का शत्रु बन गया(उत्पत्ति 3:14-15)। मनुष्य के पाप में गिरने से पहले, घरेलू जानवर, पालतू जानवर, जंगली जानवर और बाकि की सृष्टि जो इस धरती पर सक्रिय थी मरनहार अर्थात नश्वर अवस्था में रची गयी थी।

मनुष्य के पाप में गिरने से पहले, हो सकता है कि स्त्री को प्रसव पीढ़ा से होकर गुज़रना था। लेकिन पाप में गिरने के पश्चात, परमेश्वर ने इस स्त्री की प्रसव पीढ़ा को और बढ़ा दिया(उत्पत्ति 3:16)।

मनुष्य के पाप में गिरने से पहले, केवल पुरूष ही अनश्वर या अमर अवस्था में रचा गया था, क्योंकि केवल पुरूष को ही परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया था। परन्तु पुरूष के पाप में गिर जाने से, पुरूष भी मरनहार या नश्वर प्राणी बन गया जिसकी देह पुन: धरती की मिट्टी में मिल जाती है(उत्पत्ति 3:19)। लेकिन मनुष्य के पाप में गिरने के पश्चात सम्पूर्ण सृष्टि नाशमान अवस्था की बन्धुवाई और अधीनता में चली गयी(रोमियों 8:19-22)। लेकिन नाशमान शरीर के नाश या मृत्यु होने

से मनुष्य की हानि नहीं होती। क्योंकि यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर सभी लोग जी उठेगें और अनश्वरता को पुन: पहिन लेगें और (यूहन्ना 5:28-29; 1 कुरिन्थियों 15:42-44) और सम्पूर्ण शारीरिक संसार सम्पूर्ण धार्मिक जगत में पुन:स्थापित हो जाएगा(प्रेरितों 3:21;2 पतरस 3:10-14)।

(5) उद्धार के प्रति मसीही दृष्टिकोण।

"बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है"(नीतिवचन 11:30)। मनुष्य का मन केवल आत्मा नहीं, वरन वह आत्मा और देह दोनों का मिश्रण है। सम्पूर्ण मानव(प्राण = देह और आत्मा) पाप में गिर गया। सम्पूर्ण मानव को: अर्थात आत्मा और देह को उद्धार की आवश्यकता है।

यीशु मसीह सम्पूर्ण मानवजाति का उद्धार करने के लिए ही इस दुनिया में आये। वे इस दुनिया में मनुष्य के आत्मिक पक्ष(आत्मा) और उसके प्रत्यक्ष भौतिक पक्ष (देह) को बचाने के लिए आये। वह पापों को क्षमा करता है, लेकिन वह बीमारियों को चंगा, दुष्टात्मा से ग्रसित लोगों को स्वतन्त्र भी करता है(मरकुस 2:10-11,17,; लूका 4:18-19)। वह विधवाओं और अनाथों का घर बसाता है, वह परदेशियों से प्रेम करता और उनके लिए भोजन व कपड़ों की व्यवस्था करता है(व्यवस्थाविवरण 10:18; 1 यूहन्ना 3:17)। यीशु मसीह सारे मसीहियों को शुद्ध करता है(1थिस्लुनिकियों 5:23)। भविष्य में यीशु मसीह सभी मसीहियों की अर्थात उनकी आत्मा(1यूहन्ना 3:1-3) और उसकी देह (फिलिप्पियों 3:21)की महिमा करेगा।

इसलिए, किसी व्यक्ति के मन को मोह लेने या जीत लेने का अर्थ मनुष्य की देह और उसकी आत्मा से सम्बन्ध रखता है। मसीही सेवाकाई एक सम्पूर्ण सेवाकाई है। मसीहियों को लोगों के जीवन के सभी पक्षों की चिन्ता करने के लिए बुलाया गया है (लूका 2:52)।

3. बाइबल में "प्राण" और "आत्मा" शब्दों का अर्थ।

(1) इन शब्दों का अर्थ लगभग समान ही है।

"प्राण" **(Greek: psuché)** शब्द का इस्तेमाल नये नियम में करीब 100 बार किया गया है। "आत्मा" **(Greek: pneuma)** शब्द को इस्तेमाल नये नियम में लगभग 370 बार आया है। हालांकि बिते दिनों में इन दोनों के बीच में भेद या अन्तर प्रगट करने का बहुत प्रयास किया गया है लेकिन इन दोनों के बीच विशिष्ट भेद प्रगट कर पाना असम्भव है।

इन दो शब्दों के अर्थ के बीच अन्तर को लेकर जटिलताएं और भी ज्यादा हैं। उदाहरण के लिए:

- ग्रीक भाषा में अगर श्वासं के लिए तुलना करें तो उसे **psuché**(शूचे)"प्राण"(प्रेरितों 20:10) या **pneuma** (न्यूमा)"आत्मा"(2थिस्लुनिकियों 2:8)।
- शारीरिक जीवन पर ज़ोर देते हुए जीवन के तुलनात्मक पहलू **psuché(**शूचे)"प्राण" या **pneuma** (न्यूमा)"आत्मा" हो सकते हैं।
- मनुष्य का psuché(शूचे)"प्राण" उभारा जा सकता है, और उसका **pneuma** (न्यूमा)"आत्मा" उसकाया जा सकता है(प्रेरितों 17:16)।
- मनुष्य का **psuché(**शूचे)"प्राण" परमेश्वर की बढ़ाई करता है(लूका1:46) और उसका **pneuma** (न्यूमा)"आत्मा" परमेश्वर में आनन्द मनाता है।
- मनुष्य का अभौतिक जीव **psuché(**शूचे)"प्राण"(प्रकाशितवाक्य 6:9) और **pneuma** (न्यूमा)"आत्मा"(इब्रानियों 12:23) भी कहलाता है।

मनुष्य का **psuché(**शूचे)"प्राण" उसके सम्पूर्ण जीवन या उसके आपे को दर्शाता है(मरकुस 10:45; 1तीमुथीयुस 2:6) परन्तु इस स्थिति को नम्रता की आत्मा **pneuma** (न्यूमा) कहा जा सकता है। (1 कुरिन्थियों 4:21)।

(2) इन शब्दों के अलग अलग अर्थ हो सकते हैं।

सामान्यत: **psuché(**शूचे)"प्राण" भावनात्मक गतिविधियों के लिए और **pneuma** (न्यूमा)"आत्मा" मानसिक गतिविधियों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। प्राण दु:खी होता(1 मत्ती 26:38) और प्रेम करता है(मरकुस 12:30) मगर आत्मा अनुभव करता(मरकुस 2:8), योजना बनाता(प्रेरितों 19:21), जानता(1 कुरिन्थियों 2:11) और प्रार्थना करता है(1 कुरिन्थियों 14:14)।

ज्यादातर "प्राण" का समपूर्ण अभौतिक जीवन पर अधिक प्रभाव होता है जबकि"आत्मा" अधिक सीमित होता है और मानवीय आत्मा के परमेश्वर के साथ सम्बन्ध को व्यक्त करती है और मनुष्य का व्यक्तित्व उसकी अराधना या आराधना से जुड़े कामों जैसे कि प्रार्थना और साक्षी देने के द्वारा प्रगट होता है।

4. 1 थिस्लुनिकियों 5:23 में "आत्मा", प्राण" और "देह" शब्दों को समझना।

(1) यर्थाथ ग्रीक गद्यांश व उसका शाब्दिक अर्थ।

Αυτος ο Θεος της ειρηνης αγιασαι υμας ολοτελεις,
स्वयं / शान्ति का परमेश्वर / पवित्र करता है/ आपको/ पूर्ण रूप से (अन्त तक)।

και ολοκληρον υμων το πνευμα
और / हर भाग में (पूर्ण, सम्पूर्ण, साबूत) (बने रहे/ सुरक्षित रहे)/ आपका आत्मा(आप अपने आप/ विशेष करके परमेश्वरके साथ अपने सम्बन्धों में **);/και η ψυχη και το σωμα αμεμπτως εν τη παρουσια του κυριου ημων Ιησου Χριστου τηρηθεινη** और / प्राण और देह(आप खुद एक सम्पूर्ण आपे के रूप में , विशेष करके इस संसार से रिश्ते के रूप में)/ निन्दा/ और वापस आना/ यीशु मसीह का/ बाकि रहेगा(भयंकर दण्ड से बचे रहने के लिए)।

(2) गद्यांश का अनुवाद और व्याख्या।

यह गद्याशं मनुष्य के स्वभाव को तीन भागों में विभाजित करने की शिक्षा प्रदान नहीं करता है। शब्द: आत्मा, प्राण और देह मनुष्य के तीन भागों को प्रदर्शित नहीं करते हैं। प्रथम व्यक्तिगत सर्वनाम "तुम्हें" प्रथम वाक्य से सम्बन्धित हैं। आत्मा (परमेश्वर से जुड़ा हुआ आपका अप्रत्यक्ष जीव) शब्द दूसरे वाक्य से जुड़ा है। शब्द प्राण और देह (इस संसार से जुड़ा हुआ आपका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष जीवन) तीसरे वाक्य से सम्बन्धित है। प्रथम वाक्य में सर्वनाम "तुम्हें", दूसरे वाक्य में संज्ञा "तुम्हारी आत्मा" और संज्ञाएं "प्राण और देह" सभी समान अभिव्यक्तियां हैं(लूका 1:46-47 में समानवाचक)।

आगे की स्थिति "हर एक भाग में" और "निष्कलंक" सम्पूर्णता पर ज़ोर देती है।
प्रथम विशेषण का अर्थ है "अन्त तक"(पूर्ण,आर पार)
दूसरा विशेषण का अर्थ है"हर भाग में" (पूर्ण, पूरा, अखण्ड)
तीसरी क्रिया विशेषण का अर्थ है " बिना किसी दोष के"(दोषरहित)

अत: इस गद्यांश का ग्रीक अनुवाद कुछ इस तरह से होना चाहिए:
शान्ति का परमेश्वर आप की तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे;
और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक *पूरे पूरे* और *दोषरहित* व सुरक्षित रहें।

(5) इब्रानियों 4:12 में "आत्मा", प्राण" और "देह" शब्दों को समझना।

यर्थाथ ग्रीक गद्यांश व उसका शाब्दिक अर्थ।

Ζων γαρ ο λογος του θεου και ενεργης και τομωτερος υπερ πασαν μαχαιραν διστομον
क्योंकि जीवित/ परमेश्वर का वचन/ और/ प्रभावशाली (सक्रिय,शक्तिशाली)/ आर/ चोखा(काटने वाला/ दो धारी तलवार से भी ज्यादा)

και διικνουμενος αχρι μερισμου ψυχης και πνευματος, αρμων τε και μυελων,
और/ छेदता है/ को/ अलग करके / प्राण और आत्मा को/ और/ गाँठ गाँठ और गूदे गूदे को/

και κριτικος ενθυμησεων και εννοιων καρδιας).
और / तुरन्त जांचता और परखता है/ विचारों को/ और/ भावनाओं को / हृदय की।

(2) गद्यांश का अनुवाद और व्याख्या।

यह गद्याशं मनुष्य के स्वभाव को तीन भागों में विभाजित करने की शिक्षा प्रदान नहीं करता है। इस गद्याशं के आधार पर लेखक के बारे में किसी भी प्रकार के निष्कर्ष तक पहुंचना निराधार होगा।
चार शब्दों का संग्रह: प्राण और आत्मा , गाँठ गाँठ और गूदा गूदा, मनुष्य के संपूर्ण मानसिक व आत्मिक स्वभाव को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल की गयी अभिव्यक्ति है, जिसे समझना बहुत जरूरी है। परमेश्वर हमारे आत्मिक जीव की अति गहन तह की तहकीकात करता है और मनुष्य के मन में छुपे विचारों को सामने लाता है। परमेश्वर न्याय के दिन निश्चय ही इस काम को करेगा। (इब्रानियों 4:13;1 कुरिन्थियों 4:5)।
अत: ग्रीक गद्याशं का अनुवाद कुछ इस तरह से किया जाना चाहिए।
क्योंकि परमेश्वर वचन जीवित और प्रबल है। वह हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है; और गांठ-गाँठ और गूदे गूदे को अलग करके, आर पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारा को जाँचता है।"

(6) मरकुस 12:30 में "हृदय", प्राण" और "मन" "सामर्थ्य " शब्दों को समझना।

शब्द "हृदय" और "प्राण " और "मन " के ग्रीक भाषा में अलग अलग मतलब हैं। सामान्य तौर पर हृदय(ग्रीक: कार्डिया)मनुष्य के अस्तित्व का केन्द्र बिन्दू है,अर्थात व सारे विचारों, शब्दों और कार्यो का कुण्ड है (नीतिवचन 4:23); प्राण(ग्रीक : शूचे) मनुष्य की भावनात्मक गतिविधियों का सिंहासन है; तथा मन (ग्रीक :डियानोईया) उसकी बुद्धि, इच्छा और उसके स्वभाव को केन्द्र बिन्दू है। सामर्थ्य (ग्रीक : इश्चुश)उसके कामों की सारी शक्ति व सामर्थ्य है। इसके अलावा हमें इस अनुच्छेद का अधिक मूल्यांकन नहीं करना चाहिए। कुल मिलाकर इन चार शब्दों का अर्थ है कि मसीहियों को परमेश्वर और उसमें पायी जानी वाली विशेषताओं को प्रेम करना चाहिए।

7.जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में "प्राण " और "आत्मा" शब्द।

बाइबल में "प्राण" और "आत्मा" शब्द के बीच में कोई विशेष अन्तर प्रदान नहीं किया गया है। दोनो ही शब्दों का इस्तेमाल मनुष्य के जीवन, उसके भौतिक जीवन, उसके अप्रत्यक्ष जीवन और उसके आत्मिक जीवन के सिद्धान्तों का वणर्न करने के लिए किया गया है।

(1)मृत्यु से पहले मनुष्य के जीवन के सिद्धान्त को या तो "प्राण" या फिर "आत्मा" शब्द से प्रदर्शित किया गया है।

बाइबल में दोनो ही शब्दों का इस्तेमाल मनुष्य की शारीरिक मृत्यु होने से पहले जीवन के सिद्धान्तों का वर्णन करने के लिए किया गया है।

उसकी शारीरिक मृत्यु से पहले,मनुष्य के नश्वर देह के भीतर जीवन का सिद्धान्त को या तो "प्राण" शब्द से दर्शाया गया है(इब्रानी भाषा में: नेफेस,ग्रीक : शूचे और जिसे "जीवन" के रूप में अनुवाद किया गया है)या शब्द " आत्मा" के द्वारा (इब्रानी: रूआच,ग्रीक: न्यूमा) दर्शाया गया है।

"प्राण" शब्द का इस्तेमाल उत्पत्ति 2:7; भजन 31:9; 63:1; मत्ती 6:25-27; 16:25-26; प्रकाशितवाक्य 18:13 में किया गया है।

"आत्मा" शब्द का इस्तेमाल अय्यूब 34:14-15; भजन 31:5; यहेजकेल 36526; लूका 23: 46; रोमियों 8:10; 1 कुरिन्थियों 7:34; 2 कुरिन्थियों 7:1; याकूब 2:26 में किया गया है।

(1) मृत्यु से पश्चात मनुष्य के जीवन के सिद्धान्त को या तो "प्राण" या फिर "आत्मा" शब्द से प्रदर्शित किया गया है।

बाइबल मनुष्य की शारीरिक मृत्यु के पश्चात उसके अस्तित्व और उसके जीवन का वर्णन करने के लिए दोनों ही शब्दों का इस्तेमाल करती है।

उसकी शारीरिक मृत्यु के बाद, मनुष्य की नश्वर देह के बिना मनुष्य की दशा या अवस्था को या तो "प्राण"(ग्रीक:शूचे) या फिर "आत्मा "(ग्रीक: न्यूमा) के द्वारा दर्शाया गया है।

प्रकाशितवाक्य 6:9; 20:4 में "प्राण" शब्द का इस्तेमाल किया गया है।

सभोपदेशक 12:7;यशायाह 26:14; इब्रानियों 12:23 में "आत्मा" का इस्तेमाल किया गया है।

ख. शारीरिक मृत्यु की प्रकृति

लोगों के शारीरिक मृत्यु को लेकर विभिन्न दृष्टिकोण होते हैं।

1. परमेश्वर ने मनुष्य को अनश्वर बनाया था।

पढ़ें उत्पत्ति 1:27; सभोपदेशक 3:11; उत्पत्ति 2:15-17।

खोजें और चर्चा करें। मनुष्य के सृजे जाने के बाद तथा उसके पाप में गिरने से पहले मनुष्य की प्रकृति कैसी थी?

ध्यान दें। प्रथम लोग, अर्थात आदम और हव्वा को नश्वर नहीं बनाया गया था। वे परमेश्वर के स्वरूप में बनाये गये थे और ऐसा प्रतीत होता है कि यह सिद्ध अवस्था सड़ान व मरनहार अवस्था में परिवर्तित हो गयी। सृष्टि के समय,"परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में अनन्तता को डाला था"। उनकी देह और उनके प्राण पूरी तरह से अनश्वर बनाये गये थे। लेकिन उत्पत्ति 1:26-27 में हम यह नहीं पढ़ते कि परमेश्वर ने बाकि सारी सृजी वस्तुओं या जीवों को भी अनश्वर बनाया था। यह गद्यांश हमें केवल यह बताता है कि मानवजाति की शारीरिक मृत्यु परमेश्वर की मूल योजना या सृष्टि का हिस्सा नहीं थी।

(2) मनुष्य की शारीरिक मृत्यु पाप करने पर परमेश्वर की ओर से दिया दण्ड है।

पढ़ें उत्पत्ति 2:15-17; 3:17-19; यूहन्ना 5528-29;मत्ती 10:28;25:46; प्रकाशितवाक्य 21:8।

खोजें और चर्चा करें। पाप करने के बाद मनुष्य का स्वभाव कैसा था?

ध्यान दें। मनुष्य के पाप करने के दण्ड के रूप में मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक और अनन्त मृत्यु ने सृष्टि में प्रवेश कर लिया। मनुष्य ही पाप करता है इसलिए केवल मनुष्य ही को पाप के परिणाम के रूप में मरना पड़ता है। मानवजाति के पाप में गिरने के पश्चात, उनकी देह मरनहार देह बन गयी। इस कारण जब वे मरेगें तो उनकी देह सड़कर मिट्टी में मिल जाएगी। हालांकि उनकी देह मर जाती है, लेकिन आत्मा(या प्राण)कभी नहीं मरता और न ही उसे मारा जा सकता है।
यीशु मसीह के दूसरे आगमन और सभी प्राणियों के जी उठने के बाद, परमेश्वर विश्वासियों की देह व आत्माओं(प्राणों) को रूपान्तरित करेगें (फिलिप्पियों 3:21; 1यूहन्ना 3:1-3), लेकिन अविश्वासियों और दुष्टों की देहों और आत्माओं को नरक में डालकर नष्ट (ग्रीक :अपोल्यूमी) कर दिया जाएगा। नष्ट शब्द का अर्थ यहां पर पूरी तरह से दुष्ट जन के अस्तित्व को खत्म कर देने से नहीं है, क्योंकि लिखा हैं कि वे अनन्त काल तक नरक के दण्ड के हकदार होगें(मत्ती 25:46)

3. मनुष्य की केवल शारीरिक मृत्यु ही अस्वाभाविक है।

पढ़ें भजन संहिता 90: 7-11; रोमियों 1:32; 5:16; गलातियों 3:13।
खोजें और चर्चा करें। मनुष्य की शारीरिक मृत्यु को किस दृष्टिकोण से देखा जाता है।
ध्यान दें। कई मनुष्य की मृत्यु को स्वाभावित मानते हैं। ये लोग वास्तव में परमेश्वर को या पाप की वास्तविकता को नहीं जानते(आपके जीवन में परमेश्वर की योजना से चूक जाना पाप है) और वैसे ही मनुष्य के प्राणों की अनन्तता में न होना। इस कारण, वे सोचते हैं कि मृत्यु केवल एक उल्लेखहीन मुद्दा है या सामान्य तौर पर जीवन का अन्त है। इस प्रकार के लोग कई बार मृत्यु को किसी आतंक के रूप में नहीं लेते हैं।

लेकिन कई लोग मृत्यु को अस्वाभाविक मानते हैं। ये लोग सामान्य तौर पर परमेश्वर पर विश्वास करते और मानते हैं कि परमेश्वर ने ही मानवजाति का निर्माण किया है। लेकिन सृष्टि में मानव स्वभाव को लेकर उनके कुछ और ही विचार है इसलिए मनुष्य की मृत्यु की दशा को लेकर उनके भी बहुत से अलग दृष्टिकोण हैं।

कुछ लोग विश्वास करते हैं कि मनुष्य का मरनहार अवस्था में बनाया गया था। वे कहते हैं कि, मानवजाति पाप करने के कारण, अपने आप और अमर जीवन प्राप्त करने के स्तर तक उठाने में असफल हो गया। शारीरिक मृत्यु केवल मानवजाति की मरनहार दशा को नियमित तौर पर बनाये रखना है।

अन्य लोग(मसीही) ही मनुष्य अनश्वर दशा में रचा गया था। वे कहते हैं कि, मानवजाति के पाप करने के कारण, उसने सदाकाल के लिए अनश्वर बने रहने की सम्भवता को खो दिया। शारीरिक मृत्यु उसके पाप करने का बदले दण्ड है(उत्पत्ति 2:15-17)। बाइबल में कभी शारीरिक मृत्यु को मनुष्य के जीवन में स्वाभाविक तौर पर होने वाली किसी घटना के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है बल्कि इसे परमेश्वर के ईश्वरीय क्रोध (भजन 90:7-11), परमेश्वर के न्याय (रोमियों 1:32), एक दण्ड (वरन:क्षति) (रोमियों) और एक श्राप (गलातियों 3:13) प्रकट करने वाली अभिव्यक्ति रूप में देखा गया है।

उत्पत्ति 2:17 में केवल मनुष्य की शारीरिक मृत्यु को सम्बोधित किया गया है बाकि सारी चीज़ों की नहीं। उत्पत्ति 1:29-30 में पौधों व सब्जियों के खाये जाने की बात कही गयी हैं जो बात को प्रगट करती है कि बाकि की चीजों व प्राणियों को अनश्वर दशा में नहीं रचा गया था। अत: मनुष्य की मृत्यु परमेश्वर की सृष्टि के लिए अस्वाभाविक है,लेकिन बाकि के जीवित प्राणियों (जैसे कि पेड़ पौधों, मछलियों और पक्षियों,रेंगने वाले जन्तुआं और जानवरों की)की मृत्यु परमेश्वर की दृष्टि में अस्वाभाविक नहीं थी।

4. एक अच्छे कारण से मनुष्य की मृत्यु में विलम्ब होता है।

पढ़ें उत्पत्ति 2:17; प्रेरितों 14:15-17;रोमियों 3:25-26; 2 तीमुथीयुस 1:10; 2 पतरस 3:7-9।
खोजें और चर्चा करें। मनुष्य के पाप में गिरने के बाद परमेश्वर ने मनुष्य को तुरन्त ही मृत्यु दण्ड क्यों नहीं दे दिया?
ध्यान दें। यदि परमेश्वर केवल धर्मी होता और प्रेम न होता तो, निश्चय ही परमेश्वर ने मनुष्य को तुरन्त मृत्यु दण्ड दे दिया होता। लेकिन परमेश्वर तो धर्मी और अनुग्रहकारी(प्रेम) दोनो है, इसलिए वह अपनु सृष्टि के प्रति थोड़ा धीरज प्रगट करता है। सारी सृष्टि पर अपने सामान्य अनुग्रह के कारण, उसने पाप और मृत्यु और पाप के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को रोका और आज भी रोके रखता है।
और यीशु मसीह में होकर अपने अद्‌भुत अनुग्रह (प्रेम)से, परमेश्वर जीवन व अनश्वर ज्योति को (यूहन्ना 10:28;2 तीमुथीयुस 1:10)प्रगट करता और अन्तत: मृत्यु को नाश करता है(1कुरिन्थियों 15:50-56)! वह नहीं चाहता कि लोग नाश हों, अपितु वह चाहता है कि वे मन फिराएं(यहेजकेल 33:11;1 तीमुथीयुस 2:4;2 पतरस 3:9)।

जितने लोग भी विश्वास के द्वारा सुसमाचार का प्रतिउत्तर देते हैं:

- वे पहले ही आत्मिक मृत्यु पर उसके साथ विजय के भागीदार हैं।
- वे भविष्य में शारीरिक मृत्यु पर विजय के भी भागी होगें।
- और अनन्त मृत्यु या देह के विनाश या नरक में प्राण के नाश होने पर भी विजय को प्राप्त करेगें।

5.मनुष्य की शारीरिक मृत्यु मिटटी में वापस मिल जाना है।

पढ़ें उत्पत्ति 2:7;3:19

ध्यान दें। मनुष्य का शरीर धरती की मिट्टी से लेकर बनाया गया था। जब कभी कोई व्यक्ति मरता है, तो उसकी वर्तमान देह उसकी आत्मा (प्राण) से अलग होकर उसी भूमि की मिट्टी में वापस मिल जाती है जिससे वह निकला था, चाहे वह दफन के द्वारा हो या दाहसस्कार के द्वारा हो। "मनुष्य मिट्टी है और वह फिर मिट्टी में मिल जाएगा"।

6. शारीरिक मृत्यु के बाद मनुष्य का सम्बन्ध धरती से पूरी तरह खत्म हो जाता है।

पढ़ें भजन 49:10,17; सभोपदेशक 9:1-12; यशायाह 63:16; लूका 16:27-31; 1 तिमुथीयुस 6:7।

ध्***यान दें।*** मृत्यु की दशा के बाद मनुष्य इस धरती पर होने वाली किसी भी घटना में भाग नहीं ले पाएगा। वह इस धरती पर उसके बाद कोई जानकारी इकट्ठा नही कर सकता, वह कोई योजना नहीं बना सकता और नहीं कोई काम कर सकता है। उसका अब इस धरती पर कोई प्रभाव नहीं है! वह अब इस धरती पर रहने वाले रिश्तेदारों को नहीं जानता और न उनके साथ कोई सम्पर्क बना सकता है।[1]

शारीरिक मृत्यु के दौरान मनुष्य की देह और उसकी आत्मा अलग-अलग हो जाते हैं, वे अपने धरती पर रहने वाले अपने परिवार जनों और मित्रों से अलग हो जाते हैं, वे धरती पर प्राप्त की गयी सारी उपलब्धियों और अपनी सम्पत्ति से वंचित हो जाते हैं वरन वे धरती पर घटने वाली सारी घटनाओं से अलग हो जाते हैं। उसका शरीर तो नष्ट होकर कब्र में मिट्टी में मिल जाता है, लेकिन उसकी आत्मा का इस धरती पर होने वाले किसी भी काम में कोई भाग नहीं होता।

ग. एक मसीही की मृत्यु

खोजें व चर्चा करें। यदि मसीहियों के बदले यीशु ने कष्ट सहा और उसने अपनी जान दी, तो फिर मसीहियों को अब कष्ट सहने और मरने की अब क्या ज़रूरत है?

1. वर्तमान में मसीहियों की मृत्यु कोई दण्ड नहीं है।

पढ़ें. भजन 116:15; रोमियों 6:23; 1कुरिन्थियों 15:56; रोमियों 3:23-26; 5:6-10;इब्रानियों 9:24-26।

ध्यान दें। गैर मसीहियों के लिए उनकी शारीरिक मृत्यु आज भी उनके पापों को दण्ड है(रोमियों 6:23)।

लेकिन मसीहियों के लिए शारीरिक मृत्यु अब उनके लिए पापों का दण्ड नहीं है, क्योंकि क्रूस पर मसीह की मृत्यु द्वारा किये गये प्रायश्चित ने उनके पाप के कारण भड़के पिता के क्रोध को शान्त कर दिया है। क्रूस पर मसीह की मृत्यु पापों के विरूद्ध न्यायिक दण्ड को प्रदर्शित करता है(यशायाह 53:5-6; 1पतरस 2:24;3:18)। यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले धर्मी ठहराये जा चुके हैं, अर्थात उनके पाप क्षमा कर दिये गये हैं और उनकी शारीरिक मृत्यु को अब उनके पापों के दण्ड के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। "यहोवा के भक्तों की मृत्यु उसकी दृष्टि में अनमोल है" (भजन 116:15)।

2.मसीहियों की मृत्यु उन्हें पवित्र करने हेतू परमेश्वर का उपाय है।

पढ़ें, भजन 49:5-10, 15-17; 89:47-48;नीतिवचन 14:12,27; 21:25; रोमियों 1:28:32; रोमियों 8:17;2 कुरिन्थियों 4:7-11; इब्रानियों 4:15;5:7-10; 1पतरस 4:12-14; 1यूहन्ना 2:15-17।

ध्यान दें। कष्ट (क्लेशों के द्वारा, बिमारियों, गतिरोध, तनाव, सताव) और शारीरिक मृत्यु, जिनका अब भी मसीहियों को अपने जीवन में सामना करना पड़ता है वे परमेश्वर के उनको पवित्र करने के उपाय हैं।

यद्यपि यीशु ने कभी कोई पाप नहीं किया, फिर भी उसने अपने जीवनकाल में सभी प्रकार की परीक्षाओं और कष्टों को सामना किया। यीशु मसीह के लिए, ये सारी परीक्षाएं और कष्ट उसके कमज़ोर मानवीय स्वभाव को सिद्ध बनाने का एक तरीका था(इब्रानियों 5:8-9)।

ठीक इसी प्रकार से, हालांकि मसीही लोग पाप करते हैं, अनेकों प्रकार के कष्ट जिनसे होकर उनको गुज़रना पड़ता है, उनके घमण्ड को नम्रता में बदलने का, उनके शारीरिक जीवन को दमन करने, उनके सांसारिक जीवन का मूल्यांकन करने तथा उन्हें आत्मिक मन प्रदान करने में मदद करते हैं। बाइबल स्पष्ट तौर पर हमें शिक्षा देती है कि इस धरती पर उनके कष्ट सहने का उद्देश्य यह है कि इस धरती पर(2कुरिन्थियों 4:7;1 पतरस 4:14) बिताये जाने वाले और अनन्तकाल के लिए स्वर्ग में(मत्ती 5:11-12) यीशु मसीह का नया व पवित्र जीवन उनकी देह में होकर प्रगट हो सके।

3.मसीहियों की मृत्यु उनकी पवित्रता की परिपूर्णता और उनके सिद्ध जीवन का प्रारम्भ है।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 15:50; इब्रानियों 12:23; प्रकाशितवाक्य 21:27।

ध्यान दें। शारीरिक मृत्यु वास्तव में उन सभी कष्टों का संग्रह और अन्त है जिनसे होकर एक मसीही गुज़रता है।

1 कुरिन्थियों 15:50 में लिखा है, "मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते और न नाशमान अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। वर्तमान काल में भी मसीहियों की देह पापमय स्वभाव, कमज़ोरियों और शारीरिक मृत्यु के अधीन है। मसीहियों की वर्तमान देह अपनी सिद्ध अवस्था में भी परमेश्वर के राज्य की अधिकारी नहीं हो सकती। इसका अर्थ है कि मसीही लोग अपनी वर्तमान मरनहार अवस्था में न तो अभी स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं और न ही भविष्य में नयी धरती के अधिकारी हो सकते हैं। इसलिए मसीहियों की वर्तमान देह को पहिले मरना और फिर उन्हें रूपान्तरित होना बहुत ज़रूरी है। जिस प्रकार से मसीह ने अपनी देह में कष्ट सहने और शारीरिक मृत्यु के द्वारा महिमा को प्राप्त किया था, ठीक उसी प्रकार से मसीही लोग भी ज़मीनी कष्ट सह कर व शारीरिक मृत्यु प्राप्त करने पर ही अपनी महिमा को प्राप्त करेगें। इस धरती पर उनकी शारीरिक मृत्यु उनके आत्मा के पवित्रीकरण को सिद्ध करती है, ताकि वे "सिद्ध किये हुओं धर्मियों की आत्माएं" बन सकें (1यूहन्ना 3:1-3;इब्रानियों 12:23)। शारीरिक मृत्यु मसीहियों का अन्त नहीं है,वरन उसके सिद्ध जीवन की शुरूआत है, पहले स्वर्ग में और बाद में नयी धरमी पर! जब कोई मसीही मरेगा तो वह तुरन्त मसीह से मिलेगा और मसीह के साथ रहेगा(फिलिप्पियों 1:20-24; प्रेरितों 7:54-60)।

4. मसीहियों के लिए शारीरिक मृत्यु के भय के बदले शारीरिक पुनरूत्थान की आशा ने स्थान ले लिया है।

पढ़ें लूका 22: 40-44; प्रेरितों 2:24; इब्रानियों 2:14-15।

ध्यान दें। जिन ज़मीनी कष्टों और शारीरित मृत्यु से होकर मसीहियों को गुज़रना पड़ता है वह असल में उनके लिए स्वर्ग का द्वार बन जाता है।

मसीह ने अपनी मृत्यु और मृतकों में से जी उठने के द्वारा,*मृत्यु की यातना से छुटकारा* प्राप्त कर लिया(लूका 22:44; प्रेरितों 2:24)

मसीह भी *मसीहियों को उनको मृत्यु के भय की बन्धुवाई से स्वतन्त्र करता है*(इब्रानियों 2:14-15)। मृतको में से जी उठने की आशा ने उनके जीवन में मृत्यु के भय का स्थान ले लिया है। और प्रगतिशील आशा, मसीही पवित्रीकरण का ही एक भाग है।

घ.मृत्यु के पश्चात मनुष्य की स्थिति

खोजें और चर्चा करें। मनुष्य की मृत्यु के पश्चा उसकी देह और उसकी आत्मा(प्राण)का क्या होता है। मृत्यु उपरान्त किस मनुष्य की देह कहां जाती है और उसकी आत्मा या प्राण का क्या होता है? क्या मृत्यु उपरान्त सारे लोगों की आत्मा या प्राण एक ही जगह पर जाती हैं?

1. वर्तमान शरीक के बिना मनुष्य अनन्त प्राणी बन जाता है।

पढ़ें सभोपदेशक 3:11

ध्यान दें। बाइबल हमें शिक्षा देती है कि मनुष्य का आत्मा (प्राण) अनन्त है। उसका वर्तमान शरीर अभी भी अस्थायी(मिट्टी) है लेकिन वह मसीह के दूसरे आगमन पर सदा काल के लिए जी उठेगें।

2. शारीरिक मृत्यु के बाद एक अधर्मी व्यक्ति की दशा।

पढ़ें मत्ती 25:46; मरकुस 9:42-48; लूका 16:22-23; 2 पतरस 2:4-10; 2 थिस्लुनिकियों 1:6-10।

ध्यान दें। एक अधर्मी व्यक्ति की मृत्यु पर,अर्थात जिस व्यक्ति ने अपने आपको यीशु मसीह के द्वारा धर्मी नहीं बनाया हो,उसकी आत्मा(प्राण) देह से अलग होते ही नरक में डाल दी जाती है। लूका 16:22-23 हमें शिक्षा देते हैं कि अधर्मी व्यक्ति को तुरन्त नरक में डाल दिया जाता है जहां पर वह कठिन यातनाओं को सहता है। प्रेरित पतरस शिक्षा देता है कि उनको न्याय के दिन तक लगातार इस पीड़ा को सहना पड़ता है। यीशु और प्रेरित पौलुस सिखाते हैं कि अधर्मी जन परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित रहते हैं और उन्हें अनन्तकाल का दण्ड मिलता है।

3. शारीरिक मृत्यु के बाद धर्मी जन की दशा।

पढ़ें 23:43; 2 कुरिन्थियों 5:8; फिलिप्पियों 1:21-23; इब्रानियों 12:22-24; रोमियों 8:35-39।

ध्यान दें। धर्मी जन की मृत्यु पर अर्थात उस व्यक्ति की मृत्यु पर जिसने यीशु मसीह के द्वारा धार्मिकता को प्राप्त किया हो, उसकी आत्मा(प्राण) देह से अलग होते ही यीशु मसीह की उपस्थिति में प्रवेश कर जाता है। लूका 16:22 हमें सिखाता है कि भिखारी, जो सम्भवत: परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी था तुरन्त स्वर्गदूतों द्वारा उठाकर अब्राहम की गोद में पहुंचा दिया गया। लूका 23:43 शिक्षा देता है कि पश्चाप करने वाला डाकू अगले ही दिन मसीह के साथ फिरदौस में प्रवेश कर गया। 2 कुरिन्थियों 5:8 शिक्षा देता है कि मसीहियों के लिए "देह में अनुपस्थित होने" का अर्थ है "परमेश्वर के साथ उसके घर में होना"। फिलिप्पियों 1:21-23 शिक्षा देते हैं कि "उसके संसार से कूच कर जाने" का अर्थ "मसीह के साथ" होना होता है। और इब्रानियों 12:22-24 उसकी उपस्थिति का स्वर्ग में वर्णन करते है कि"वह लाखों लाख स्वर्गदूतों की उपस्थिति में आता है";"पहिलौठों की कलीसिया में आता है जिनका नाम स्वर्ग में लिखे हैं";"वह परमेश्वर के पास आता है, जो सारी मानवजाति का न्यायी है";"यीशु के पास जो नयी वाचा का मध्यस्थ है"....और उन धर्मी जनों की आत्मा के पास आता है जिन्हें परमेश्वर ने सिद्ध बनाया है।" अन्त में,रोमियों 8:35-39 हमें शिक्षा देते हैं कि शारीरिक मृत्यु मसीही जन को परमेश्वर या उसके प्रति परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती है।

4.स्वर्ग में मसीहियों की आत्माओं की दशा।

खोजें और चर्चा करें। मसीहियों की आत्माएं(प्राण) स्वर्ग में क्या करती हैं और क्या अनुभव करती है?

ध्यान दें। मसीही की मृत्यु और पुनरूत्थान के बीच अन्तरिम काल में, उनका शरीर तो धरती पर कब्र में रहती है, परन्तु उनकी आत्माएं(या प्राण) परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहती हैं। उनकी आत्माए स्वर्ग में अति सचेत व सक्रिय अवस्था में होती है।

(1) मसीही लोग मसीह की महिमा को देखेगें।

पढ़ें यूहन्ना 14:1-4; 17:24

ध्यान दें। जब मसीही जन शारीरिक रूप से मर जाते हैं, उनकी आत्माएं(प्राण)मसीह की उपस्थिति में होगी और उसकी महिमा को देखेंगी, अर्थात वे उसके प्रेम और दया, उसकी पवित्रता, उसकी धार्मिकता, कृपा,बुद्धि इत्यादि को देखेगें और उसका अनुभव करेगें।

(2) मसीही जन विश्राम करेगें।

पढ़ें इब्रानियों 4:9-11; प्रकाशितवाक्य 7:16-17;14:13; 21:4

ध्यान दें। उनकी आत्माओं को हर प्रकार की प्रतिस्पर्द्धा,मेहनत,समस्याओं,चिन्ताओं,बिमारियों,कष्टों,दु:खों,भय,यातनाओं,पाप और उनके ज़मीनी जीवन में पाये जाने दु:खों से विश्राम मिल जाएगा। उन्हें भविष्य में कभी कष्ट नहीं सहने पड़ेंगे।

(3) वे ज्ञान प्राप्त करेगें।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 13:9-12।

ध्यान दें। उनका अधूरा पन पूरी तरह से खत्म हो जाएगा और वे सारी आवश्यक बातों को पूरी तर से समझ जाएगें।

(4) मसीही लोग आनन्द से भर जाएंगे।

पढ़ें भजन 16:11

ध्यान दें। वे आनन्द से भर जाएंगे और उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में अनन्त सुख प्राप्त होगा।

(5) मसीही लोग गीत गाएंगे।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 4:9-11; 5:11-14।

ध्यान दें। वे परमेश्वर के लिए नया गीत गाएंगेऔर उसकी स्तुति और आराधना करेगें।

(6) मसीही लोग सेवा करेगें।

पढ़ें। प्रकाशितवाक्य 7:9-15।

ध्यान दें। वे रात दिन परमेश्वर की सेवा करेगें। स्वर्गदूतों के समान,जिनके पास भी देह नहीं होती, मसीही लोग अलग अलग सार्थक कामों के द्वारा परमेश्वर की सेवा करेगें।

(7) मसीही लोग राज्य करेगें।

पढ़ें भजन 2:8-9; प्रकाशितवाक्य2:26-27; 3:21।

ध्यान दें। मसीह के साथ स्वर्ग में होने के कारण, मसीही लोग पाप और मृत्यु पर तथा मानव जाति के शत्रुओं और शैतान पर मसीह के राज्य और ललकार के साथ विजय में भागीदार हो जाते हैं। प्रतीकात्मक शैली का इस्तेमाल करते हुए,परमेश्वर मसीहियों का विरोध करने वाले शत्रुओं के सम्पूर्ण विनाश की तस्वीर का बखान करते हैं। मसीही लोग मसीह के द्वितीय आगमन से पूर्व ही मसीह के साथ स्वर्ग में होने पर मसीह की विजय का आनन्द मनाएंगे।

मसीही के दूसरे आगमन पर मसीही लोग मसीह के साथ जीवतों और मुर्दो का न्याय करने के लिए आएंगे(1 थिस्लुनिकियों 4:14; मत्ती 25:31-32)। अत: मसीही लोग धरती पर दुष्टों पाये जाने वाले दुष्टों पर मसीह की अन्तिम विजय और अनन्त महिमा के साझी होगें(मत्ती 13:41; प्रकाशितवाक्य 19:15-16)। मसीह और मसीहियों के शत्रु हमेशा के लिए पराजित होगें और कभी उठ नहीं पाएंगें।

यीशु मसीह के दूसरे आगमन और नयी धरती के आने पर "बारह" प्रेरित भी"बारह सिंहासनों पर विराजमान होकर, इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करेगें।(मत्ती 19:28;लूका 22:28-30)। दो अनुच्छेद परमेश्वर के राज्य की अन्तिम तस्वीर को सामने रखते हैं। "न्याय करने " अर्थ महिमा में राज्य करने या सूय के समान चमकने के रूप में समझा जाना चाहिए(दानिय्येल 12:3; मत्ती 13:43)। इस्राएल के बारह गोत्र रूपक का इस्तेमाल पुन:स्थापित नये इस्राएल को दर्शाने के लिए किया गया है और यह भी सम्भव है कि इसका हवाला संसार के इतिहास के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक परमेश्वर द्वारा चुने गये यहूदियों के बारह गोत्रों को दिखाने के लिए किया गया हो(रोमियों 11:26)या यह भी हो सकता है कि इस रूपक का इस्तेमाल संसार के इतिहास के प्रारम्भ से अन्त तक पाये जाने वाले उद्धार पाये हुए यहूदियों और गैर यहूदियों के लिए किया गया हो(गलातियों 6:16)। इन सारे मामलों में यह हवाला निश्चय तौर पर उन लोगों के लिए इस्तेमाल किया गया है जिन्होंने नया जन्म पाया हो, क्योंकि सारी चीजों के नवीनीकरण के बाद में, कोई भी अशुद्ध वस्तु परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेगी(प्रकाशितवाक्य 21:27)। बाइबल इससे ज़्यादा स्वर्ग में मसीहियों के अनुभवों और गतिविधियों का वर्णन नहीं करती है!

ड़.जी उठने के बाद मनुष्य की दशा।

खोजें व चर्चा करें। जी उठने के बाद मसीहियों के शरीरों का क्या होता है?

1.जी उठने के बाद एक अधर्मी व्यक्ति की दशा।

पढ़ें मत्ती 10:28;प्रकाशितवाक्य 21:8

ध्यान दें। जी उठने के समय में अधर्मियों की देह पुन: उसकी आत्मा (प्राण) के साथ जुड़ जाएगी। स्वर्गदूत उन्हें हवा अर्थात आसमान में मसीह के सामने पेश करेगें(मत्ती 24:40,41) और वहा पर उनकी दण्डाज्ञा सार्वजनिक तौर पर घोषित की जाएगी। (मत्ती 25:41-46)। उसके बाद वे अपनी देह और आत्मा(प्राण) सहित नरक में डाल दिये जाएंगे(मत्ती 10:28; प्रकाशितवाक्य 21:8)।

2.जी उठने के बाद एक धर्मी व्यक्ति की दशा।

पढ़ें फिलिप्पियों 3:20-21;रोमियों 4:17

ध्यान दें। यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक, उनके मृतक शरीरों की मिट्टी या तो उनकी कब्रों में होगी या फिर धरती पर कहीं पड़ी होगी। और मसीह के वापस आने पर, उनके मृतक शरीर की मिट्टी पुन: जीवित और रूपान्तरित हो जाएगी ताकि वे भी यीशु मसीह के समान महिमित व पुनरूत्थित देह प्राप्त कर सकें। यीशु मसीह, जिसने सारी प्रत्यक्ष वस्तुओं को शून्य में से रचा(यूहन्ना 1:3; इब्रानियों 11:3), वह यीशु उनके पूर्व शारीरिक शरीरों को भी जिला व रूपान्तरित कर सकता है ताकि उनकी देह उसकी अपनी पुनर्जीवित देह के समान बन जाए। उनके भी शरीर उनके आत्माओं के साथ एक हो जाएंगे जो मसीह के साथ स्वर्ग से उतरेगें (1थिस्लुनिकियों 4:14,16)। उनका धर्मी ठहराया जाना और उनकी प्रसंशा का काम भी बादलों में ही होगा(1थिस्लुनिकियों 4:17; मत्ती 25:31-40)। अन्तिम न्याय व धरती के नये हो जाने पर वे मसीह के साथ धरती पर उतरेगें और सदा काल के लिए इस धरती पर राज्य करेगें(थिस्लुनिकियों 4:17; प्रकाशितवाक्य 21:1-5)।

3. जी उठे मसीहियों के रूपान्तरित शरीर अक्षय, महिमित, शक्तिशाली, आत्मिक और अनश्वर शरीर होगें।

पढ़ें 1कुरिन्थियों 15:35-44; फिलिप्पियों 3:21।

ध्यान दें। बाइबल के प्रतीकों का इस्तेमाल करते हुए,पौलुस सिखाता है कि विश्वासी मृत्यु के बाद कब्र में ठीक उसी प्रकार से जाता है जिस प्रकार से बीज धरती पर बोया जाता है, जिसमें जीवन अंकुरित हो और भी अधिक महिमामय जीवन का रूप प्राप्त कर लेता है। मनुष्य का प्राकृतिक शरीर "शरीर और आत्मा है" अर्थात मरनहार,अनुग्रह के बगैर और कमज़ोर है, लेकिन मसीह की पुनर्जीवित देह अक्षय, महिमित, शक्तिशाली, आत्मिक और अनश्वर देह होगी।

मसीहियों की पुनर्जीवित देह

- अक्षय होगी, अर्थात वह कभी बूढ़ी, बीमार या कमज़ोर नहीं होगी और न मरेगी।
- महिमामय होगी, अर्थात जिसमे प्रेम,पवित्रता,शक्ति और परमेश्वर की बुद्धि जैसी विशेषताओं से लैस होगी।
- शक्तिशाली होगी,अर्थात जिसे अनन्त तक रूपान्तरित जीवन व्यतीत करने शक्ति प्राप्त होगी।

- आत्मिक होगी, अर्थात वह सिद्ध जीवन, बनी रहने वाली आशीषों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में सदा काल के लिए विद्यमान रहेगें ।
- अनश्वर होगी,अर्थात वे सिद्ध जीवन के साथ में हमेशा के लिए, सर्वदा आशीषित अवस्था में और परमेश्वर की उपस्थिति में बने रहेगें।

छोटा करके कहें तो, उनके जी उठने पर उसकी गुरूत्वाकर्षित देह मसीह की महिमित देह जैसी बन जाएगी, जो वर्तमान धरती के गुरूत्वाकर्षण के दायरे में सीमित नहीं होती है।(यूहन्ना 20:6-9,19,26;लूका24:21; प्रेरितों 1:9;प्रकाशितवाक्य 21:4)

च. मसीहियों में अकसर पूछे जाने वाल प्रश्न

1. क्या मसीही लोग मृतकों का आदर करते हैं? क्या घर के प्रिय सदस्यों की बरसी को स्मरणोत्सव के रूप में मनाया जाना चाहिए?

आराधना:नहीं! "सम्मान": हां। इस प्रश्न का उत्तर परिशिष्ट 8 में दिया गया है।

2. क्या स्वर्ग में पहुंचकर मसीही लोग आपस में एक दूसरे को पहिचान पाएंगे?

लूका 16:9 के अनुसार मसीहियों ने अपनी सांसारिक सम्पत्ति के बल पर जितने मित्र बनाये हैं, वे उन्हें स्वर्ग के अनन्त निवासों में ले लेगें।

लूका 16:19-31 के अनुसार स्वर्ग में आपसी बातचीत को माना गया है।

मत्ती 8:11 में स्वर्ग में होने वाले आनन्द और किसी बारात की प्रतीकात्मक तस्वीर का वर्णन किया गया है। अत: स्वर्ग में एक दूसरे को देखकर पहिचान पाने ओर एक दूसरे की संगति का आनन्द मनाने की अपेक्षा पूरी तरीके से बाइबल आधारित है जब तक कि यह बात मसीह की संगति से सरोकार रखती है।

3.यदि मसीही लोग स्वर्ग में एक दूसरे को पहिचान लेगें, तो क्या वे धरती पर रहने वाले उन परिवार के सदस्यों ओर मित्रों की कमी महसूस नहीं करेगें जो कभी मसीही नहीं बने?

मत्ती 12:46-50 के अनुसार, धरती के वे सभी सगे सम्बन्धी जिन्होंने "मसीह को "स्वीकार नहीं किया वे स्वर्ग में अपनी पहिचान और अपने महत्व को खो देगें। अत: हम इस बात की अपेक्षा कर सकते हैं कि जब हम स्वर्ग में जाएंगे तो हम अपने गैर मसीही मित्रों और सम्बन्धियों को याद नहीं करेगें।

च. मसीही दफन क्रियाक्रम

1.मृत्यु के दौरान खोये गये प्रियजन का दु:ख।

(1) दु:ख प्रगट करने का मौका प्रदान करें।

जब भी कभी हमारा को प्रिय जन गुजर जाता है तो दु:ख और वेदना प्रगट करना तो स्वाभाविक होता है। मसीहियों को निश्चय ही आशा है कि उनके प्रियजन एक दिन फिर से जी उठेगें लेकिन प्रिय जन को खोने के दु:ख और विलाप को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता। जब यीशु का मित्र मरा तो यीशु रोया। मसीहीयों को भी प्रियजन के प्रति अपने दु:ख को प्रगट करने का उचित स्थान देना चाहिए।

(2) दुसरों की दु:ख प्रक्रिया में सहायता करें।

मसीहियों को विलाप करने या दु:ख प्रगट करने में उन लोगों की मदद करनी चाहिए जिन्होंने अपने परिवार के एक सदस्य खो दिया है। उनके पास उनकी सहायता करने के लिए चार मुख्य लक्ष्य है:

- उनके नुकसान की वास्तविकता को स्वीकार करें।
- प्रिय जन के चले जाने से होने वाले दु:ख को महसूस करें।
- गुजर चुके प्रियजन के बिना रहने की वाली परिस्थिति में रहने की आदत डाल लें।
- अपने जीवन में नये सम्बन्धों को बनाकर और नये लक्ष्यों का साधने के द्वारा गुजरे हुए प्रिय जन से भावनात्मक सम्बन्धों से बाहर आ जाना चाहिए।

विलाप करने की यह प्रक्रिया आपके वर्षों का समय ले सकती है।

2. मसीही क्रियाक्रम का तरीका।

(1) दफन या दाहसंस्कार।

बाइबल में यह उल्लेख नहीं किया गया है कि मसीहियों को मरने वाले के शरीर के साथ क्या करना चाहिए। दाहसंस्कार का मुद्दा अतिजटिल है। कई मसीही विश्वास करते हैं कि क्योंक बाइबल में पुनर्जीवित होने का जिक्र दिया गया है इसलिए शरीर को जलाने या किसी अन्य रीति से नाश करने की बजाय उसे ज़मीन में दफन कर देना चाहिए। अन्य मसीही विश्वास करते हैं, कि शरीर तो किसी भी तरह से नाश होकर मिट्टी में ही मिल जाएगा अब चाहे आप उसे दफन करें या जलायें या वह

किसी दुर्घटना का शिकार हो(उत्पत्ति; 3:19; प्रकाशितवाक्य 20:13), मसीही लोग इस बात का निर्णय लेने के लिए पूरी तरह से स्वतन्त्र है कि वे मृतक की देह को दफन करना चाहते हैं या जलाना। वे विश्वास करते हैं कि, जिस परमेश्वर ने मनुष्य को मिट्टी में से लेकर बनाया था अर्थात ज़मीन के तत्व में से(उत्पत्ति 2:7), मृतक की देह की मिट्टी को फिर से जीवित कर देगा(इब्रानियों 11:3; 1 थिस्लुनिकियों 4:16)। लेकिन कई मसीही लोग शव के जलाये जाने का कड़ा विरोध करते हैं।

(2) दफन समारोह

बाइबल में इस बात का भी जिक्र नहीं किया गया है कि शव का अन्तिम सस्कार या दफन किस प्रकार किया जाना चाहिए। लेकिन हां बाइबल हमें यह जरूर बताती है कि इस संसार में मृत्यु क्यों है, लोग मृत्यु के बाद में कहा पर जाते हैं, और यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर मृतकों के पुनर्जीवित होने पर और न्याय के समय में क्या होगा। अत: बाइबल मसीहियों को यह नहीं बताती कि उसे शवों का अन्तिम संस्कार किस नीति से करना चाहिए, लेकिन यह जरूरी बताती है कि वे दफन के समय पर क्या प्रचार कर सकते हैं। मसीहीयों में दफन समारोह में, प्रचारक सुसमाचार प्रचार कर सकता है और वहां पर उपस्थित लोगों को बाइबल की महत्वपूर्ण शिक्षाओं को सिखा सकता है।

3. मसीही दफन पर प्रचार ।

मसीही जन दफन के समय में बहुत से संदेशों को प्रचार कर सकता है। सम्भावित चार निम्नलिखित हैं:

(1) मसीही जन सुसमाचार की उदघोषणा कर सकता है।

क्योंकि किसी भी दफन समारोह में गैर मसीही लोग जरूर उपस्थिति होगे, अत: प्रचारक मसीह के सुसाचार का प्रचार कर सकता है।

(2) मसीही जन पाप व मृत्यु की समस्या पर प्रचार कर सकता है।

पढ़ें रोमियों 6:23; इब्रानियों 9:27; रोमियों 5:8-11; 2 तीमुथीयुस 1:10 ;1कुरिन्थियो 4:7-10

परमेश्वर ने पाप को निश्चय ही मृत्यु से दण्डित करना चाहिए। परमेश्वर ने इस जगत को मृत्यु दण्ड के रूप में दी। परमेश्वर पवित्र और धर्मी है इसलिए उसे निश्चय ही पाप और मृत्यु को दण्डित करना चाहिए।

लेकिन कौन है जो मृत्यु की समस्या का समाधान कर सकता है? विज्ञान मृत्यु की समस्या का समाधान नहीं कर सकता। कोई जादू या धर्म मृत्यु की समस्या का समाधान नहीं कर सकता। यीशु न कहा," पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ"(यूहन्ना 11:25)! परमेश्वर ने सुसमाचार सुनाने के द्वारा लोगों पर अनन्त जीवन और अनैतिकता को उजागर किया। लोगों के लिए उसके प्रेम व दया के चलते परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर अपने आपको विश्वास करने वालों के लिए दे दिया। परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा पाप और मृत्यु की समस्या का समाधान कर दिया। जो कोई यीशु मसीह में विश्वास करता है वह वह धर्मी ठहर चुका है और वह अन्तिम न्याय तक परमेश्वर के क्रोध से बचा रहेगा।

परमेश्वर ने दु:खों और कष्टों को पवित्रीकरण के लिए एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया। मसीही लोगों पर कष्ट और दु:ख अब दण्ड के रूप में नहीं पड़ते, परन्तु यह उनके पवित्रीकरण(सदा काल के लिए परमेश्वर का ठहराये जाने के लिए) और स्वर्ग में जाने का द्वार है।

(3) मसीही जन यीशु मसीह द्वारा उसके बदले में कष्टों और मृत्यु को सहने के बारे में प्रचार कर सकता है।

पढ़ें इब्रानियों 7:26-27; 10:1-4; रोमियों 3:21-26; यूहन्ना 5:24।

सम्पूर्ण इतिहास में, लोगों को अपने पापों की शर्मिन्दगी हुई है और वे क्षमा प्राप्त करने के लिए परमेश्वर को पशुबलि चढ़ाते रहे हैं। लेकिन पशु कोई व्यक्ति नहीं है, वे सिद्ध नहीं है और न ही वे स्वेच्छा से बलिदान देते हैं। इस कारण पशु बलि कभी भी मनुष्यों के पापों को क्षमा नहीं कर सकता। उनके बलिदानों के बावजूद लोगों में दोष भावना बनी रहती है और वे जीवन भर उनके पापों के लिए शर्मिन्दगी महसूस करते हैं।

लेकिन, यीशु मसीह एक मनुष्य था, वह पूरी तरह से निष्कलंक और उस पर विश्वास करने वालों के लिए अपने प्राण देने के लिए इच्छुक था। यीशु मसीह ने विश्वासियों के बदले मृत्युदण्ड को स्वीकार किया। वही हमारे लिए एकमात्र सिद्ध बलिदान है। विश्वासियों के पापों के प्रति परमेश्वर का धार्मिक क्रोध और दण्ड यीशु मसीह के ऊपर डाल दिया गया है और वह क्रोध और दण्ड अब मसीहियों से दूर हो गया है। हर एक जन जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है, उस पर फिर कभी कोई दण्ड की आज्ञा नहीं होगी। वह कभी भी शारीरिक मृत्यु को पाप के दण्ड के रूप में स्वीकार नहीं, वरन स्वर्ग में यीशु मसीह के साथ सिद्ध जीवन की शुरूआत के रूप में स्वीकार करेगा।

(4) मसीही जन अपने स्थान पर यीशु मसीह द्वारा मृत्यु के आतंक को सहने के बारे में प्रचार कर सकता है।

पढ़ें मत्ती 27:46; प्रेरितों 2:22-24;इब्रानियों 2:9,14-15।

मसीह ने मसीहियों के बदले मृत्यु की यातना को सहा। परमेश्वर के अनुग्रह से उसने मसीहियों के बदले मृत्यु को चखा। मसीहियों के अनुग्रह से ही उसने परमेश्वर पिता द्वारा त्यागे जाने की दशा और कष्टों और आतंक को सहा। इसलिए जो कोई मसीह पर विश्वास करता है वह मृत्यु की शक्ति और मृत्यु के भय की गुलामी से आज़ाद हो गया है! मसीही लोग,जो बाइबल के सत्यों पर विश्वास करते हैं, वे उन यातनाओं, कड़वाहट और आतंक का सामना नहीं करेगें जो मृत्यु बाकि लोगों पर डालती है, क्योंकि यीशु मसीह ने पहले ही उनके स्थान पर इन सारी यातनाओं और कष्टों को सह लिया है!

(5) मसीही लोग मनुष्य की निर्णायक मंजिल के बारे में प्रचार कर सकते हैं।

पढ़ें 1 थिस्लुनिकियों 5:1-3; मत्ती 25:31-34,41,46; लूका 4519; 2 कुरिन्थियों 6:2।

मनुष्य के जीवन की अन्तिम मंजिल इस धरती पर रहते हुए यीशु मसीह के साथ उसके व्यक्तिगत सम्बन्ध के आधार पर निर्धारित होती है। मनुष्य की शारीरिक मृत्यु के पश्चात, उसको उद्धार पाने का दूसरा मौका प्राप्त नहीं होगा।

अचानक से यीशु मसीह का दूसरा आगमन, मृतको में से जी उठने की तेजी और तीव्रता से अन्तिम न्याय का होना यह दर्शाता है कि जब ये सारी घटनाएं घटेंगी तो किसी को भी मन फिराव करने का मौका नहीं मिलेगा। तब बहुत देरी हो चुकी होगी। अत: यीशु मसीह के साथ आपका सम्बन्ध और मृत्यु से पहले जिस तरीके से आप इस दुनिया में उसके साथ और उसके लिए जीवन व्यतीत करते हैं निर्धारित करता है कि आपका न्याय कैसे होगा।

उसके प्रथम आगमन पर यीशु मसीह बहुत से लोगों को छुटकारा देने के लिए आये! "मनुष्य का पुत्र खोये हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।"(लूका 19:10)। "परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए(यूहन्ना 3:17)। अब भी यह "परमेश्वर के अनुग्रह का समय है"(यशायाह 61:1-2)।

लेकिन उसके दूसरे आगमन पर यीशु मसीह लोगों को बदलने के लिए नहीं वरन, लोगों का न्याय करने के लिए आता है(मत्ती 3:11-12)! इस कारण प्रचारक को दफन समारोह के समय सुसमाचार प्रचार करते समय लोगों व रिश्तेदारों के सामने यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करने की चुनौति रखनी चाहिए। 2 कुरिन्थियों 6:2 में लिखा है,"देखो अभी वह प्रसन्नता का समय है, देखों अभी वह उद्धार का दिन है।" अभी जब आप जीवित हैं, आपके पास यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले उद्धार पाने का अवसर है। अत: यदि आपने अभी तक अपने जीवन में मसीह को स्वीकार नहीं किया है, तो आप अभी उसे अपने जीवन व हृदय में आने का न्यौता दे सकते हैं (यूहन्ना 1:12; प्रकाशितवाक्य 3:20)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण :** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2. "मसीही दफन" पर -किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। 1तीमुथीयुस 1-4** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. **याद करें।** नयी बाइबल आयत को याद करें व दोहराएं। **(9) यूहन्ना 8:12** रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।

5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 9** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।

6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।